Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 47–49

जलवायु परिवर्तन और किसान की चुनौती

डॉ. अभिषेक यादव[1], डॉ. दिग्विजय दुबे[2], डॉ. नरेंद्र कुमार[3], डॉ. निमित कुमार[4] एवं डॉ. विकास कुमार[5]

[1]वाई.पी.–1, फसल उत्पादन विभाग, आईसीएआर–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर
[2]सह. प्राध्यापक कृषि संकाय, सेज यूनिवर्सिटी, इंदौर, मध्य प्रदेश
[3]सहायक प्रोफेसर पशुधन उत्पादन प्रबंधन पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश
[4]सहायक प्रोफेसर, कृषि विज्ञान महाविद्यालय, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय,मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
[5]सहायक प्रोफेसर, कृषि विज्ञान संकाय, एसकेडी विश्वविद्यालय हनुमानगढ़, भारत।

Email Id: – ay1511655@gmail.com

परिचय

भारत की अर्थव्यवस्था को कृषि कहा जाता है। देश की आधी से अधिक आबादी खेती पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निर्भर है। किसान अपनी मेहनत से पूरे समाज को भोजन देता है, इसलिए उसे ''अन्नदाता'' कहा जाता है। लेकिन आज किसान की यह भूमिका पहले की तुलना में अधिक कठिन नहीं है। किसानों को बदलते समय के साथ नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी चुनौती है। कृषि क्षेत्र को बढ़ी हुई प्रदूषण, वैश्विक ऊष्मन, अनियमित वर्षा और भयंकर मौसमी हालात प्रभावित कर रहे हैं। यह सिर्फ कृषि नहीं हैय यह हमारे भोजन, स्वास्थ्य और अस्तित्व से भी जुड़ा है।

जलवायु परिवर्तनः एक वैश्विक संकट

जलवायु परिवर्तन का अर्थ है पृथ्वी के मौसमी पैटर्न और तापमान में निरंतर बदलाव। इसके मुख्य कारणों में औद्योगिकीकरण, वाहन प्रदूषण, ऊर्जा उत्पादन में कोयले और पेट्रोलियम का अत्यधिक उपयोग और वनों की अंधाधुंध कटाई शामिल हैं। पृथ्वी का औसत तापमान पिछले एक शताब्दी में लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है। यह सुनने में भले ही छोटा लगे, लेकिन इसका कारण यह है कि हिमनद पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और वर्षा का पैटर्न बदल रहा है।

भारत में जलवायु परिवर्तन और कृषि

भारत की कृषि मानसून पर आधारित है। यदि समय पर मानसून नहीं आता या बहुत अधिक वर्षा होती है, तो फसलें बर्बाद हो जाती हैं। हाल के वर्षों में, कहीं बहुत अधिक बारिश से बाढ़ होती है तो कहीं बिल्कुल बारिश नहीं होती और सूखा होता है। किसानों की उपज और आय पर इसका सीधा असर पड़ता है। सबसे अधिक प्रभावित होते हैं छोटे और सीमांत

किसान, जिनके पास न तो पर्याप्त सिंचाई व्यवस्था है और न ही वैकल्पिक साधन हैं।

जलवायु परिवर्तन के कृषि पर दुष्प्रभाव

1. **अनियमित वर्षा और सूखा:** मानसून का समय और तीव्रता बदलने से कभी बाढ़ तो कभी सूखा देखने को मिलता है। धान जैसी जल–आधारित फसलें अधिक वर्षा से प्रभावित होती हैं, वहीं दालें और तिलहन सूखे से नष्ट हो जाते हैं।
2. **तापमान में वृद्धि:** बढ़ती गर्मी गेहूँ और सरसों जैसी रबी फसलों के लिए घातक है। अधिक तापमान में दाने सही से नहीं बनते और पैदावार घट जाती है।
3. **फसल की गुणवत्ता पर असर:** फलों और सब्जियों का आकार, रंग और स्वाद मौसम से गहराई से जुड़ा होता है। अधिक गर्मी और अनियमित वर्षा उनकी गुणवत्ता को घटा देती है।
4. **कीट और रोगों का प्रकोप:** जलवायु परिवर्तन से कीट–पतंगों और रोगों की संख्या बढ़ रही है। नई–नई बीमारियाँ फसलों पर हमला कर रही हैं, जिनसे किसान अनजान हैं।
5. **मृदा और जल संसाधनों पर दबाव:** अधिक वर्षा से मिट्टी का कटाव होता है, जबकि सूखे से मिट्टी की नमी और उर्वरता खत्म हो जाती है। भूजल स्तर भी लगातार नीचे जा रहा है।
6. **पशुपालन पर असर:** गर्मी बढ़ने से पशुओं का दूध उत्पादन कम हो जाता है। चारे की कमी भी एक गंभीर समस्या बन जाती है।

किसान की चुनौतियाँ

जलवायु परिवर्तन केवल मौसम की समस्या नहीं है, बल्कि यह किसान की आजीविका से सीधे जुड़ा संकट है।

- **आर्थिक असुरक्षा:** फसल नष्ट होने पर किसान कर्ज में डूब जाता है और कई बार आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाता है।
- **बाजार असंतुलन:** जब उत्पादन कम होता है तो दाम बढ़ते हैं और जब उत्पादन अधिक होता है तो दाम गिर जाते हैं। इस अस्थिरता से किसान को नुकसान होता है।
- **भंडारण और परिवहन:** अचानक मौसम बदल जाने पर फसल को सुरक्षित रखना और मंडी तक पहुँचाना भी कठिन हो जाता है।
- **मानसिक तनाव:** बार–बार नुकसान झेलने से किसान हताश हो जाता है। यह केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य की भी बड़ी समस्या है।

सरकार और समाज की जिम्मेदारी

किसान इस संकट से अकेले नहीं लड़ सकता। सरकार और समाज भी उसकी सहायता करनी चाहिए।

- **फसल बीमा योजनाएँ:** किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसे कार्यक्रम हैं।
- **न्यूनतम सहायता मूल्य:** किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिलना चाहिए ताकि वे नुकसान की स्थिति में भी जीवित रह सकें।
- **सिंचाई योजनाएँ:** ड्रिप इरिगेशन, नहर, तालाब, चेक–डैम और अन्य योजनाएं सूखे से बचाव में मदद करती हैं।
- **तकनीकी डेटा:** किसानों को मौसम की सही और समय पर जानकारी देना महत्वपूर्ण है। इसके लिए डिजिटल

प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप उपयोगी हो सकते हैं।

किसान के लिए संभावित समाधान

- **कृषि विविधीकरण:** किसान को सिर्फ एक फसल पर भरोसा नहीं करना चाहिए। दलहन, तिलहन, सब्जियाँ और फल जैसी विभिन्न फसलें उगाने से खतरा कम होता है।
- **प्राकृतिक और जैविक खेती:** जैविक खाद और प्राकृतिक तरीकों से खेती करने से मिट्टी की गुणवत्ता सुधरती है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है। जलसंरक्षण ड्रिप इरिगेशन, तालाब निर्माण और वर्षा जल संचयन से पानी बचाया जा सकता है।
- **जलवायु अनुकूल प्रजातियां:** वैज्ञानिकों ने कई सूखे और रोग–प्रतिरोधी बीज बनाए हैं, जो किसानों को उपयोग करना चाहिए।
- **सामुदायिक कृषि और सहकारी मॉडल:** सामूहिक खेती छोटे किसानों की लागत कम करेगी और संसाधनों का बेहतर उपयोग होगा।
- **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:** सौर ऊर्जा से चलने वाले पंप और उपकरण किसानों के लिए किफायती और पर्यावरण हितैषी साबित हो सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने में विज्ञान और तकनीक की भूमिका

तकनीक और विज्ञान शायद किसानों का सबसे अच्छा साथी हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उपग्रह चित्रण, रिमोट सेंसिंग और जीआईएस जैसी तकनीकों ने मौसम का पूर्वानुमान अधिक सटीक बनाया है। ड्रोन तकनीक, स्मार्ट ग्रीनहाउस और सेंसर आधारित सिंचाई किसानों को तत्काल सूचना और समाधान दे सकते हैं। छोटे किसानों के लिए इन तकनीकों को आसान बनाना बहुत महत्वपूर्ण है।

समाज की भूमिका

केवल सरकार और किसान ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को मिलकर इस चुनौती का सामना करना होगा।

- वृक्षारोपण और जल संरक्षण में सामूहिक भागीदारी।
- स्थानीय स्तर पर किसानों से सीधे खरीदकर बिचौलियों को कम करना।
- उपभोक्ताओं द्वारा पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को प्राथमिकता देना।
- युवाओं को खेती की ओर आकर्षित करना और कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन आज की सबसे बड़ी चुनौती है और इसका सीधा असर किसानों पर पड़ रहा है। किसान, जो समाज का अन्नदाता है, आज अपनी फसल, आय और भविष्य को लेकर असुरक्षित महसूस कर रहा है। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रही तो आने वाले वर्षों में खाद्यान्न संकट गहराएगा। इसलिए जरूरी है कि हम सब मिलकर इस समस्या का समाधान करें। पर्यावरण संरक्षण, टिकाऊ खेती, तकनीक का उपयोग और किसानों को उचित समर्थन – यही वे कदम हैं जो किसान को मजबूत बनाएंगे। जब किसान सुरक्षित और खुशहाल होगा तभी हमारा देश भी समृद्ध और आत्मनिर्भर बनेगा।